गर्मी के मौसम में बहु कटान वाली ज्वार दुधारू पशुओं हेतु लाभकारी

यूपी मैसेंजर संवाददाता

कानपुर। सीएसए के कुलपति डॉक्टर बिजेंद्र सिंह के निर्देश के क्रम में आज प्रसार निदेशालय के पशुपालन वैज्ञानिक डॉ सोहन लाल वर्मा ने गर्मियों में बहु कटान वाली ज्वार (चारा) की खेती हेतु किसानों के लिए एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि गर्मियों के मौसम में हरे चारे की कमी हो जाती है। ऐसे में दुधारू पशुओं के लिए इस मौसम में बहु कटान वाली ज्वार बहुत ही लाभप्रद होती है। उन्होंने बताया कि भारत में 4% भूमि पर चारे की खेती की जाती है। डॉ बर्मा ने कहा कि ज्वार का चारा स्वाद व गुणवत्ता में बहुत अच्छा होता है जिसे पशु बहुत ही चाव के साथ खाते हैं। डॉ वर्मा ने बताया कि शुष्क भार के आधार पर ज्वार (चारे) में औसत 9 से 10% प्रोटीन, 8 से 17% शर्करा, 30 से 32% फाइबर, 36% सैलूलोज एवं 21 से 26% हेमीसैलूलोज पाया जाता है।

उन्होंने बताया कि ज्वार (चारा) के बोने का उत्तम समय मध्य अप्रैल से मध्य मई तक रहता है। तथा इसका बीज 40 से 50 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर पड़ता है। बहु कटान वाली चरी की किस्में जैसे- एस एस जी 59-3, एम पी चरी, पूसा चरी 23, सी एस एच 20- एमएफ, सी एस एच -24 एमएफ है। उन्होंने बताया की बहू कटान चारे का उत्पादन 650 से 700 कुंतल प्रति हेक्टेयर हरा चारा तथा 150 से 200 कुंतल सूखा चारा प्रति हेक्टेयर उत्पादन होता है। उन्होंने पशुपालकों को सावधान करते हुए बताया की ज्वार में हाइड्रोसाइएनिक असुरक्षित मात्रा में विद्यमान रहता है। तथा इसकी अधिक सांद्रता पशुओं के लिए हानिकारक होती है। उन्होंने बताया कि हाइड्रोसाइएनिक अम्ल की सांद्रता यदि चारे में 200 पीपीएम से अधिक है। तो यह हानिकारक होती है डॉ वर्मा ने बताया कि प्राय- बहु कटान चारा ज्वार के गुण तथा सिंचाई की दशाओं में खेती करने के कारण बुवाई के 50 से 60 दिन में पशुओं के खिलाने योग हो जाती है।लेकिन यदि जमीन में नमी की कमी रहती है। तो फसल में विषैला तत्व जमा हो जाता है।तथा सूखे की दशा में कटाई के बाद आने वाले कल्लों में हाइड्रोसाइएनिक अम्ल की सांद्रता अधिक होती है। अतः किसान भाई कटाई से पहले सिंचाई करें तथा कटाई के बाद हरे चारे को 4 से 5 घंटे धूप में रखें तत्पश्चात अन्य चारे के साथ उचित मात्रा में मिलाकर पशुओं को खिलाना चाहिए।

लखनऊ और देहरादून से प्रकाशित राष्ट्रीय हिंदी दैनिक
जन एक्सप्रेस
@janexpressnews janexpresslive janexpresslive www.janexpresslive.com/epaper
लखनऊ | वर्षः 14 | अंकः 173 | मूल्यः ₹ 3.00/- पेज : 12 | गुरुवार | 06 अप्रैल, 2023

बहु कटान वाली ज्वार की खेती पर एडवाइजरी जारी

जन एक्सप्रेस/कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय मे बुधवार को प्रसार निदेशालय के पशुपालन वैज्ञानिक डॉ. सोहन लाल वर्मा ने किसानों के लिए गर्मियों में बहु कटान वाली ज्वार (चारा) की खेती पर एडवाइजरी जारी की। उन्होंने बताया कि गर्मियों के मौसम में हरे चारे की कमी होने पर दुधारू पशुओं के लिए बहु कटान वाली ज्वार बहुत लाभप्रद होती है। उन्होंने बताया कि ज्वार का चारा स्वाद व गुणवत्ता में बहुत अच्छा होता है जिसे पशु बहुत ही चाव से खाते हैं। डॉ.वर्मा ने कहा कि शुष्क भार के आधार पर ज्वार (चारे) में औसत 9 से 10 फीसदी प्रोटीन, 8 से 17 फीसदी शर्करा, 30 से 32 फीसदी फाइबर, 36 फीसदी सैलूलोज एवं 21 से 26 फीसदी हेमीसैलूलोज पाया जाता है वह इसकी बुवाई का उत्तम समय मध्य अप्रैल से मध्य मई तक रहता है। उन्होंने बहु कटान वाली चरी की किस्मों व इसके उत्पादन संबंधी विषय पर जानकारी दी।

सिटी एवेन्यू NEWS
दैनिक
कानपुर, गुरुवार
06.04.2023
वर्ष: 09 | अंक: 07
पृष्ठ: 08, मूल्य: रु 02
आरएनआइ: यूपीएचआईएन 2014/536
कानपुर से प्रकाशित

गर्मी के मौसम में बहु कटान वाली ज्वार दुधारू पशुओं हेतु लाभकारी

सीए न्यूज

कानपुर: सीएसए के कुलपति डॉक्टर बिजेंद्र सिंह के निर्देश के क्रम में आज प्रसार निदेशालय के पशुपालन वैज्ञानिक डॉ सोहन लाल वर्मा ने गर्मियों में बहु कटान वाली ज्वार (चारा) की खेती हेतु किसानों के लिए एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि गर्मियों के मौसम में हरे चारे की कमी हो जाती है। ऐसे में दुधारू पशुओं के लिए इस मौसम में बहु कटान वाली ज्वार बहुत ही लाभप्रद होती है। उन्होंने बताया कि भारत में 4त्र भूमि पर चारे की खेती की जाती है। डॉ बर्मा ने कहा कि ज्वार का चारा स्वाद व गुणवत्ता में बहुत अच्छा होता है जिसे पशु बहुत ही चाव के साथ खाते हैं। डॉ वर्मा ने बताया कि शुष्क भार के आधार पर ज्वार (चारे) में औसत 9 से 10त्र प्रोटीन, 8 से 17त्र शर्करा, 30 से 32त्र फाइबर, 36त्र सैलूलोज एवं 21 से 26त्र हेमीसैलूलोज पाया जाता है। उन्होंने बताया कि ज्वार (चारा) के बोने का

उत्तम समय मध्य अप्रैल से मध्य मई तक रहता है। तथा इसका बीज 40 से 50 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर पड़ता है। बहु कटान वाली चरी की किस्में जैसे- एस एस जी 59-3, एम पी चरी, पूसा चरी 23, सी एस एच 20- एमएफ, सी एस एच -24 एमएफ है। उन्होंने बताया की बहू कटान चारे का उत्पादन 650 से 700 कुंतल प्रति हेक्टेयर हरा चारा तथा 150 से 200 कुंतल सूखा चारा प्रति हेक्टेयर उत्पादन होता है। उन्होंने पशुपालकों को सावधान करते हुए बताया की ज्वार में हाइड्रोसाइएनिक असुरक्षित मात्रा में विद्यमान रहता है। तथा इसकी अधिक सांद्रता पशुओं के लिए हानिकारक होती है। उन्होंने बताया कि हाइड्रोसाइएनिक अम्ल की सांद्रता यदि चारे में 200 पीपीएम से अधिक है। तो यह हानिकारक होती है डॉ वर्मा ने बताया कि प्रायः बहु कटान चारा ज्वार के गुण तथा सिंचाई की दशाओं में खेती करने के कारण बुवाई के 50 से 60 दिन में पशुओं के खिलाने योग हो जाती है।लेकिन यदि जमीन में नमी की कमी रहती है। तो फसल में विषैला तत्व जमा हो जाता है।तथा सूखे की दशा में कटाई के बाद आने वाले कल्लों में हाइड्रोसाइएनिक अम्ल की सांद्रता अधिक होती है। अतः किसान भाई कटाई से पहले सिंचाई करें तथा कटाई के बाद हरे चारे को 4 से 5 घंटे धूप में रखें तत्पश्चात अन्य चारे के साथ उचित मात्रा में मिलाकर पशुओं को खिलाना चाहिए।

वर्ष-17 अंक-93 पृष्ठ-8 मूल्य-1 रुपए कानपुर, गुरूवार 06 अप्रैल 2023
कानपुर व औरैया से एक साथ प्रकाशित, लखनऊ, इलाहाबाद, बुंदेलखंड, फतेहपुर, इटावा, कन्नौज, मैनपुरी, ऐटा, हरदोई, उन्नाव, कानपुर देहात में प्रसारित
RNI N.UPHIN/2007/27090
दैनिक नगर छाया
आप की आवाज़.....

गर्मी के मौसम में बहु कटान वाली ज्वार दुधारू पशुओं के लिए लाभकारी

कानपुर (नगर छाया समाचार)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर बिजेंद्र सिंह के निर्देश के क्रम में आज प्रसार निदेशालय के पशुपालन वैज्ञानिक डॉ सोहन लाल वर्मा ने गर्मियों में बहु कटान वाली ज्वार (चारा) की खेती हेतु किसानों के लिए एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि गर्मियों के मौसम में हरे चारे की कमी हो जाती है। ऐसे में दुधारू पशुओं के लिए इस मौसम में बहु कटान वाली ज्वार बहुत ही लाभप्रद होती है। उन्होंने बताया कि भारत में 4 प्रतिशत भूमि पर चारे की खेती की जाती है। डॉ बर्मा ने कहा कि ज्वार का चारा स्वाद व गुणवत्ता में बहुत अच्छा होता है जिसे पशु बहुत ही चाव के साथ खाते हैं। डॉ वर्मा ने बताया कि शुष्क भार के आधार पर ज्वार (चारे) में औसत 9 से 10त्न प्रोटीन, 8 से 17प्रतिशत शर्करा, 30 से 32प्रतिशत फाइबर, 36त्न सैलूलोज एवं 21 से 26त्न हेमीसैलूलोज पाया जाता है। उन्होंने बताया कि ज्वार (चारा) के बोने का उत्तम समय मध्य

अप्रैल से मध्य मई तक रहता है। तथा इसका बीज 40 से 50 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर पड़ता है। बहु कटान वाली चरी की किस्में जैसे- एस एस जी 59-3, एम पी चरी, पूसा चरी 23, सी एस एच 20-एमएफ, सी एस एच -24 एमएफ है। उन्होंने बताया की बहू कटान चारे का उत्पादन 650 से 700 कुंतल प्रति हेक्टेयर हरा चारा तथा 150 से 200 कुंतल सूखा चारा प्रति हेक्टेयर उत्पादन होता है। उन्होंने पशुपालकों को सावधान करते हुए बताया की ज्वार में हाइड्रोसाइएनिक असुरक्षित मात्रा में विद्यमान रहता है। तथा इसकी अधिक सांद्रता पशुओं के लिए हानिकारक होती है। उन्होंने बताया कि हाइड्रोसाइएनिक अम्ल की सांद्रता यदि चारे में 200 पीपीएम से अधिक है। तो यह हानिकारक होती है डॉ वर्मा ने बताया कि प्राय- बहु कटान चारा ज्वार के गुण तथा सिंचाई की दशाओं में खेती करने के कारण बुवाई के 50 से 60 दिन में पशुओं के खिलाने योग हो जाती है।लेकिन यदि जमीन में नमी की कमी रहती है। तो फसल में विषैला तत्व जमा हो जाता है।तथा सूखे की दशा में कटाई के बाद आने वाले कल्लों में हाइड्रोसाइएनिक अम्ल की सांद्रता अधिक होती है। अतः किसान भाई कटाई से पहले सिंचाई करें तथा कटाई के बाद हरे चारे को 4 से 5 घंटे धूप में रखें तत्पश्चात अन्य चारे के साथ उचित मात्रा में मिलाकर पशुओं को खिलाना चाहिए।

दुधारू पशुओं के लिए लाभकारी है गर्मी के मौसम में बहु कटान वाली ज्वार

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर बिजेंद्र सिंह के निर्देश के क्रम में आज प्रसार निदेशालय के पशुपालन वैज्ञानिक डॉ सोहन लाल वर्मा ने गर्मियों में बहु कटान वाली ज्वार (चारा) की खेती हेतु किसानों के लिए एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि गर्मियों के मौसम में हरे चारे की कमी हो जाती है। ऐसे में दुधारू पशुओं के लिए इस मौसम में बहु कटान वाली ज्वार बहुत ही लाभप्रद होती है। उन्होंने बताया कि भारत में 4 प्रतिशत भूमि पर चारे की खेती की जाती है। डॉ बर्मा ने कहा कि ज्वार का चारा स्वाद व गुणवत्ता में बहुत अच्छा होता है जिसे पशु बहुत ही चाव के साथ खाते हैं। डॉ वर्मा ने बताया कि शुष्क भार के आधार पर ज्वार (चारे) में औसत 9 से 10 प्रतिशत प्रोटीन, 8 से 17 प्रतिशत शर्करा, 30 से 32 प्रतिशत फाइबर, 36त्र सैलूलोज एवं 21 से 26 प्रतिशत हेमीसैलूलोज पाया जाता है। उन्होंने बताया कि ज्वार (चारा) के बोने का उत्तम समय

मध्य अप्रैल से मध्य मई तक रहता है। तथा इसका बीज 40 से 50 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर पड़ता है। बहु कटान वाली चरी की किस्में जैसे- एस एस जी 59-3, एम पी चरी, पूसा चरी 23, सी एस एच 20-एमएफ, सी एस एच -24 एमएफ है। उन्होंने बताया की बहू कटान चारे का उत्पादन 650 से 700 कुंतल प्रति हेक्टेयर हरा चारा तथा 150 से 200 कुंतल सूखा चारा प्रति हेक्टेयर उत्पादन होता है। उन्होंने पशुपालकों को सावधान करते हुए बताया की ज्वार में हाइड्रोसाइएनिक असुरक्षित मात्रा में विद्यमान रहता है। तथा इसकी अधिक सांद्रता पशुओं के लिए हानिकारक होती है। उन्होंने बताया कि हाइड्रोसाइएनिक अम्ल की सांद्रता यदि चारे में 200 पीपीएम से अधिक है। तो यह हानिकारक होती है डॉ वर्मा ने बताया कि प्रायः बहु कटान चारा ज्वार के गुण तथा सिंचाई की दशाओं में खेती करने के कारण बुवाई के 50 से 60 दिन में पशुओं के खिलाने योग हो जाती है लेकिन यदि जमीन में नमी की कमी रहती है। तो फसल में विषैला तत्व जमा हो जाता है। तथा सूखे की दशा में कटाई के बाद आने वाले कल्लों में हाइड्रोसाइएनिक अम्ल की सांद्रता अधिक होती है। अतः किसान भाई कटाई से पहले सिंचाई करें तथा कटाई के बाद हरे चारे को 4 से 5 घंटे धूप में रखें तत्पश्चात अन्य चारे के साथ उचित मात्रा में मिलाकर पशुओं को खिलाना चाहिए।

गर्मी में ज्वार से दुधारू पशुओं को प्रोटीन मिलता

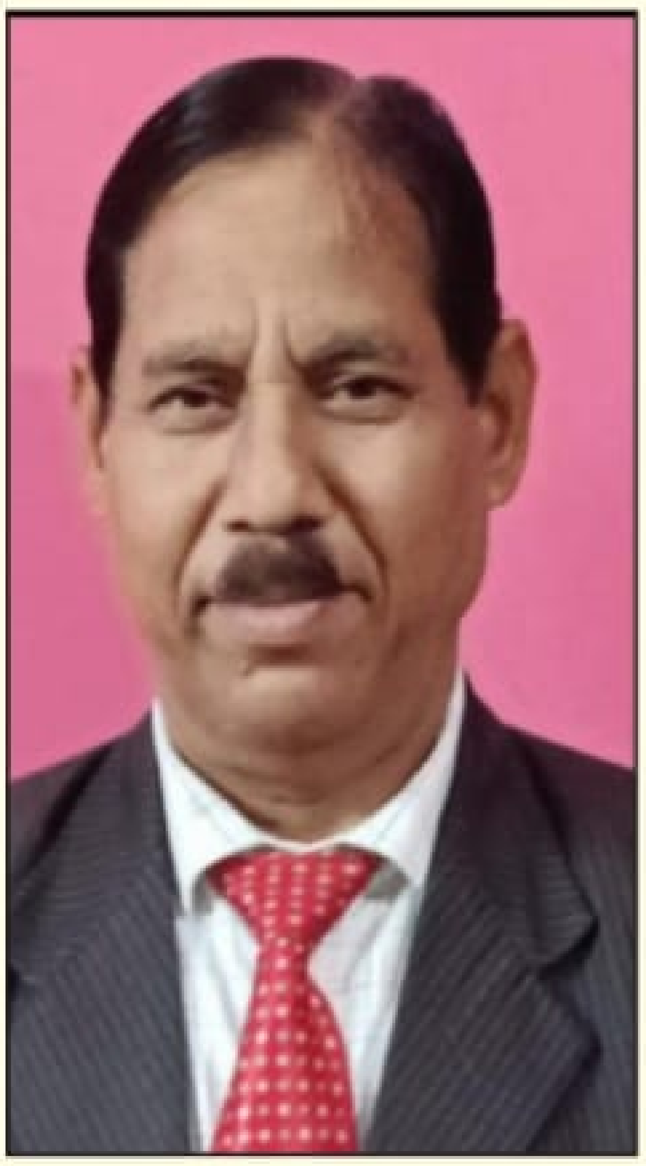

डीटीएनएन

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर बिजेंद्र सिंह के निर्देश के क्रम में आज प्रसार निदेशालय के पशुपालन वैज्ञानिक डॉ सोहन लाल वर्मा ने गर्मियों में बहु कटान वाली ज्वार (चारा) की खेती हेतु किसानों के लिए एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि गर्मियों के मौसम में हरे चारे की कमी हो जाती है। ऐसे में दुधारू पशुओं के लिए इस मौसम में बहु कटान वाली ज्वार बहुत ही लाभप्रद होती है। उन्होंने बताया कि भारत में 4त्न भूमि पर चारे की खेती की जाती है। डॉ बर्मा ने कहा कि ज्वार का चारा स्वाद व गुणवत्ता में बहुत अच्छा होता है जिसे पशु बहुत ही चाव के साथ खाते हैं। डॉ वर्मा ने बताया कि शुष्क भार के आधार पर ज्वार (चारे) में औसत 9 से 10त्न प्रोटीन, 8 से 17त्न शर्करा, 30 से 32त्न फाइबर, 36त्न सैलूलोज एवं 21 से 26त्न हेमीसैलूलोज पाया जाता है। उन्होंने बताया कि ज्वार (चारा) के बोने का उत्तम समय मध्य अप्रैल से मध्य मई तक रहता है। तथा इसका बीज 40 से 50 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर पड़ता है। बहु कटान वाली चरी की किस्में जैसे- एस एस जी 59-3, एम पी चरी, पूसा चरी 23, सी एस एच 20- एमएफ, सी एस एच -24 एमएफ है। उन्होंने बताया की बहू कटान चारे का उत्पादन 650 से 700 कुंतल प्रति हेक्टेयर हरा चारा तथा 150 से 200 कुंतल सूखा चारा प्रति हेक्टेयर उत्पादन होता है।

उन्होंने पशुपालकों को सावधान करते हुए बताया की ज्वार में हाइड्रोसाइएनिक असुरक्षित मात्रा में विद्यमान रहता है। तथा इसकी अधिक सांद्रता पशुओं के लिए हानिकारक होती है। उन्होंने बताया कि हाइड्रोसाइएनिक अम्ल की सांद्रता यदि चारे में 200 पीपीएम से अधिक है। तो यह हानिकारक होती है डॉ वर्मा ने बताया कि प्राय- बहु कटान चारा ज्वार के गुण तथा सिंचाई की दशाओं में खेती करने के कारण बुवाई के 50 से 60 दिन में पशुओं के खिलाने योग हो जाती है।लेकिन यदि जमीन में नमी की कमी रहती है। तो फसल में विषैला तत्व जमा हो जाता है।तथा सूखे की दशा में कटाई के बाद आने वाले कल्लों में हाइड्रोसाइएनिक अम्ल की सांद्रता अधिक होती है। अतः किसान भाई कटाई से पहले सिंचाई करें तथा कटाई के बाद हरे चारे को 4 से 5 घंटे धूप में रखें तत्पश्चात अन्य चारे के साथ उचित मात्रा में मिलाकर पशुओं को खिलाना चाहिए।